सावधान ! - यह इस्लामी आतंकवाद है

वीरता जब भागती है तो उसके पैरों से राजनीति के छलछद्म की धूलि - उड़ती है। वही धूलि आज इस देश का कायर राजनीतिक नेतृत्व उड़ाकर हिन्दू समाज एवं इस राष्ट्र के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। क्या यह सच नहीं कि इस राष्ट्र का कायर नेतृत्व एवं समाज अपने ही राष्ट्रपरिवार की लाशों की - अनदेखी कर रहा है? रोजरोज के हिन्दू हत्याकाण्ड पर निर्दोष हिन्दुओं के आँसू हमें - विचलित नहीं करते, एकएक उजड़ते घर-, एकएक सिन्दूर पोछती माँग-, सूनी होती माँ की गोद हम देखते हैं और चुप रहते हैं। यह कैसी कायरता है? अपने ही देवाधिदेव महादेव का दर्शन करने के लिए हिन्दू कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए जज़िया देता है, तो पवित्र अमरनाथ यात्रा तथा वैष्णो देवी के दर्शन सेना के साये में होते हैं। भारत के अतिरिक्त विश्व में शायद ही ऐसा कोई समाज हो जिसे अपने ही आराध्य देवों के दर्शन इस तरह अपमानित होकर करने पड़ते हों। आज मन्दिर रक्त-रंजित किए जा रहे हैं और हिन्दुओं का रक्त पीने वाले नरपिशाच आतंकवाद के नाम पर नंगा नाच कर रहे हैं। क्या है यह आतंकवाद? क्या इस्लाम ही आतंकवाद का दूसरा रूप है? इस देश अथवा विश्व के कुछ कथित बुद्धिजीवी आतंकवाद के साथ इस्लाम शब्द जोड़े जाने का विरोध करते हैं। वे इसे इस्लाम को बदनाम करने की साजिश बताते हैं। लेकिन आज जिसे आई0आई 0एस 0, अलकायदा, सिमी, लश्कर-ए-तैयबा अथवा हूजी आदि द्वारा प्रायोजित आतंकवाद कहा जा रहा है, जिसे गुमराह बेरोजगारों की करतूत कहा जा रहा है, भारत सरकार इन आतंकवादियों को भाड़े का सैनिक बता रही है वह वास्तव में देश और दुनियाँ को नष्ट करने का एक अन्तर्राष्ट्रीय मजहबी जुनून है, जिसे सिर्फ और सिर्फ इस्लाम के नाम पर अंजाम दिया जा रहा है। जो प्रतिदिन सुबहशाम समाचारों के - साथ हमारे सामने लाशोंके चीथड़े परोस रहे हैं, अगर यह आतंकवाद इस्लाम के नाम पर नहीं है तो क्या है? क्यों रोजरोज निरपराध हिन्दुओं की हत्या होती है?

क्यों अफगानिस्तानपाकिस्तान से हिन्दुओं का पूरी तरह सफाया हो गया-? क्यों बांग्लादेश में हिन्दुओं के सफाये का अन्तिम चरण चल रहा है? क्यों पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से हिन्दुओं का सफाया हो गया? क्यों कश्मीर घाटी मुस्लिम बहुल होते ही भारत विरोधी हो गयी और हिन्दुओं का वहाँ से सफाया हो गया? क्यों रूस के मुस्लिम बहुल क्षेत्र रूस से अलग हो गए या शेष होना चाहते हैं? क्यों यूगोस्लाविया खण्डित हो गया? क्यों दुनियाँ भर के मुसलमान इजराइल का नामोनिशान मिटा देना चाहते हैं? क्यों दुनियाँ का हर मुस्लिम बहुल क्षेत्र अपनी मातृभूमि का चीर हरण करने में कोई संकोच नहीं करता है? आखिर चेचेन्या, दागेस्तान, कोसोवो, कश्मीर घाटी सबकी एक जैसी स्थिति, एक जैसे ही कारण क्यों है? क्यों आज दुनियाँ के लगभग सभी आतंकवादी हमलों की जड़ें मदरसों तक जाती हैं? यह जानते हुए भी कि भारत के अन्दर लगभग हर आतंकवादी घटनाओं के तार मदरसों अथवा मस्जिदों से जुड़े हैं, इस देश का नेतृत्व अनजान क्यों बना है? सीमावर्ती क्षेत्रों में कुकुरमुत्तों की तरह उग आये मदरसे एवं मस्जिदें आखिर क्या संदेश दे रही हैं? वहाँ पर चल रही गतिविधियों पर कथित धर्मनिरपेक्षतावादी मौन क्यों? क्या वे शुतुरमुर्ग की तरह निर्लज्ज और पौरुषहीन हो गए हैं जो सामने के खतरे से मुँह मोड़ रहे हैं? नित्य निरन्तर हो रहे आतंकी हमले तो यही-आभास कराते हैं कि जैसे हमारी धमनियों में रक्त नहीं पानी बह रहा हो और लगता है कि हिन्दू समाज की राष्ट्रीयता जैसे मर चुकी है। भारत विरोधी ताकतें जैसे लगता है भारत माता के शवयात्रा की तैयारी कर रही हों। इस देश के तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी खाल ओढ़े भेड़िये उसे नोचने को आतुर हैं, तो कुछ तथाकथित राष्ट्रवादी भी सर्वधर्म समभाव के नाम पर शवयात्रा में शामिल होकर धर्मनिरपेक्षता के नाम पर घण्टा घड़ियाल बजा रहे हैं, लेकिन अगर इस राष्ट्र और उसकी प्राचीन संस्कृति को सुरक्षित रखना है तो वृहद् हिन्दू समाज को जगना ही होगा, शिव रूपी उस कापालिक संन्यासी की तरह जो राष्ट्रमाता के शव की प्रतीक्षा कर 'शव साधना' के माध्यम से उस में प्राण फूँके। जब भारत का राष्ट्रत्व जगेगा, भारत

माता सिंहनी की तरह दहाड़ उठेंगी, तब जागृत हिन्दू महाकाली की तरह आतंकवादियों के नरमुण्डों की माला पहनकर अपने रक्तिम लपलपाती जिह्वा से आतंक के पर्याय नरपिशाचों का रक्तपान करेगा। तब पंचनद)अफगानिस्तान(और सप्तनद)पाकिस्तान(में फिर से भगवा लहरायेगा। हिन्द महासागर भीषण गर्जन कर दहाड़ उठेगा। कैलाश पर शिव के ताण्डव से हिमालय चिघाड़ उठेगा। फिर कहीं नहीं होगा आतंकवाद। तब बुद्ध मुस्करा उठेंगे। फिर गंगा कलकल करती हमें लोरी सुनायेगी। फिर पंचनद और सप्तनद की तरंगों से वेद की ऋचाएँ रची जायेंगी। धर्म की जय होगी, अधर्म का नाश होगा और तब विश्व का कल्याण होगा।